IJFANS INTERNATIONAL JOURNAL OF FOOD AND NUTRITIONAL SCIENCES
ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 10, Iss 4, 2021

रामचरित मानस में लोकमङ्गल की भावना

हसनखान क□ कुलकर्णी, सह प्राध्यापक
इंदिरा गांधी सरकारी प्रथम दर्जे महिला कालेज
सागर, जिला- शिवमोगा,[कर्नाटक]-577401

तुलस□दास जन्म परिचय:-

गोस्वामी तुलसीदास राम भक्ति शाखा के प्रमुख कवि हैं। इनका जन्म वि.संवत 1589 (सन 1532 ई.) में उत्तर प्रदेश के राजापुर गांव में हुआ था। तुलसी बाबा नरहरी दास के मार्ग दर्शन में राम भक्ति मार्ग को अपनाया "रामचरित मानस", जानकी मंगल, पार्वती मंगल, बरव□रामायण, विनय पत्रिका, आदि राम भक्ति के काव्य हैं इनका श्रेष्ठ काव्य ह॥ इनका देहांत वि.संवत 1680 (1623 ई.) में हुआ।

रामचरितमानस की कथा वस्तु:-

'रामचरितमानस' की काथा को वाल्मिकी रामायण, भागवत पुराण, वेद आदि ग्रंथों से ग्रहण की गई ह॥ महाभारत से शङ्क-वष्णवों के विग्रह तथा उपशम की उक्तियाँ, 'श्रीमदभागवत' से वर्षा एवं शरद ऋतुओं के वर्ण्न, वाल्मिकी रामायण से 'रामकथा' और हनुमान नाटक से मुद्रिका प्रसंग, 'आध्यात्म रामायण' से राम का अलौकिक रूप ग्रहण किए हैं। इन सभी घटनाओं को आत्मसात कर के उनकी मौलिक कृति 'रामचरित मानस' का सृजन किया ह॥

रामचरित मानस का महत्व:-

तुलसीदास के सामने श्रीमद्भागवत भगवान श्रीकृष्ण की कथा प्रसिद्ध थी और उसमें श्रीराम का चरित्र भी एक अध्याय में आगया था, लेकिन राम कथा उतनी तल्लीनता के साथा उभर कर नहीं आई थी जितनी श्रीकृष्ण की। इसका प्रचार भी उत्तर से लेकर दक्षिण तक हो चुकाथा । इसलिए अब यह आवश्यकता थी कि भगवान श्रीराम का भी उत्तर से लेकर दक्षिण, पूरब से लेकर पश्चिम तक प्रचार करने की आवश्यकता थी। भारतीय आर्य समाज की इ आवश्यकता को पहचान कर तुलसी दासजी रामचरित मानस किई रचना की।

रामचरित मानस के सभी पात्रों में 90% लोक कल्याण की भावना ह॥ सन.1500 ई. में लिखे गये श्रीमदभागवत में श्रीकृष्ण के पात्र को भगवान का स्थान प्राप्त हो चुका था। इस समय श्रीरामचरित्र के लोक प्रचार की कमी थी, इसको पूर्ण करने का बेडा तुलसीदास ने उठाया और हिंदी में 'रामचरितमानस' लिखकर उसकी आपूर्ती की। रामचरितमानस भगवान श्रीराम की भक्ति से ओत-प्रोत ह॥ इस काव्य में शिष्य धर्म (गुरु-शिष्य का संबंध), भ्रातृत्व धर्म (भाई-भाई का प्रेम), पति धर्म (पति-पत्नि का प्रेम सबंध) का पालनहुआ ह॥ इसके साथ-साथ पुत्र और पिता का संबंध, स्वामी और सेवक का संबंध, मित्र-मित्र का संबंध, राजा प्रजा का संबंध आदर्श रूप में दिखाइ देता ह॥

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 10, Iss 4, 2021

तुलसीदास भगवान श्रीराम के श्रेष्ठ भक्त कवि थे। इनकी भक्ति लोक मंगलदायक सिध्द हुई ह। तुलसीदासजी ने जीवन में मोक्ष पाने केलिए साधना के रूप में श्रीराम की भक्ति की। कवि सकल विश्व के जीवों को सुखी देखना चाहते थे, उन की आशा ह कि मानव संसार की मायाजाल से दूर रह कर लोक कल्याण कार्य का अभिलाषी होन चाहिए। जग में कोई भी जीव क्यों न हो एक दूसरे को दु:ख नहीं पहुँचाना चाहिए। रामचरित मानस के आरंभ में ही तुलसीदास ने लिखा ह कि-

"मगल करन कलि मल हरनि तुलस कथा रघुनाथ की"।

कलि युग में फ़ले मलिनता, दुराचार को मिटना ही तुलसीदास का उद्देश्य था। इसके लिए उन्हों ने सगुण भक्ति का सहारा लिया। वे अवतारी राम को अप्ना आराध्य दव मान कर लोकहित साहित्य की रचना किए।

हिंदू धर्म कीमान्यता के अनुसार भगवान विष्णु के दस(10) अवतार माने जाते हैं। श्रीहरी विष्णु ने धर्म की रक्षा के लिए हरेक युग में नया रूप धारण कर इस धरती पर आये हैं। **सत युग अथवा कृत युग** में तीन अवतार 1. मत्स्यावतार, 2. कूर्मावतार, 3. वराहावतार, **त्रेता युग** में चार अवतार 4. नरसिंहावतार, 5. वामनावतार, 6. परशुरामावतार, 7. रामवतार, **द्वापर युग** में दो अवतार 8. कृष्णावतार, 9. बलराम, **कलियुग** में दो अवतार 10. गौतम बुद्ध इस युग के अंत में **भागवत पुराण** के अनुसार कल्कि का कावतार होगा। इस से अन्याय और अनाचार का नाश होगा और न्याय की स्थापना होगी फ़िर **सत्य युग** की स्थापना होगी।

त्रेतायुग में राक्षस राजा रावण समाज में बहुत उधम मचायाथा, लोगों पर अन्याय अत्याचार कर रहा था। देवि-देवता भी उससे डरने लगे थे उसकी हत्या के लिए विष्णु अयोध्या में राजा दशरथ और कौशल्या के पुत्र **'भगवान श्रराम'** के रूप में जन्म लिए । इस अवतार में विष्णु ने अनेक बलिष्ट राक्षसों का वध कर मर्यादा पूर्ण जीवनयापन किया। पिता का कहना मान कर माँ कक्कई और भरत के हित के लिए वे वनवास भी गये। यह कारण मात्र था मूल उद्देश्य लोक कल्याण राक्त्सों के संहार का था। एक बार वनवास में चित्रकूट जाकर वाल्मिकी आश्रम में पहूचते हैं और मुनिवर को प्रणाम कर अभय का, उनकी रक्षा का भरोसा देते हैं तो वे कहते हैं-

कस न कहहु अस रघुकुल केतू। तुम्ह पालक संतत श्रुति सेतु॥
छंद - श्रुति सेतु पालक राम। तुम्ह जगदीस माया जानकी॥
जो सृजित जगु पालति हरित। रुख पाइ कृपानिधान की।॥
जो सहससीसु अहीसु महिधरु। लखनु सचराचर धनी॥
सर काज धरि नरराज तनु चले दलन खल निसिचर अनी॥

सो-राम सरूप तुम्हारा। वचन अगोचर बुद्धिपर॥
अविगत अकथ अपार एति-नेति निति निगम कह॥[1]

अर्थ:- पंचवटी आश्रम में वाल्मिकी मुनि राम से कहते हैं कि- हेराम तुम रघुकुल का तारा (केतु) हो, तुम्हीं मनु स्मृति, वेद ग्रंथों की रक्षा करने वाले हो। नहीं कहना चाहिए,

तुलसी के अनुसार भगवान श्रीराम की कथा कली युग के पापों को नाश करने वाली हक्यों कि इस काव्य में संसार के भोग विलासों का प्रचार नहीं हुआ ह। संसार के भोग अर्थात लालच, काम, क्रोध, लोभ, अहंकार, मोह आदि का प्रचार नहीं हुआ ह। समाज में मनुष्य जब कष्ट में दु:खी, हातश होजाता ह, तो ऐसे समय यह काव्य उसे उपर उठा लेता ह। इस काव्य में सदाचार, भक्ति, ज्ञान, मुक्ति, वाग्य जसे अच्छे गुण दिखाईदेते हैं।

वैश्व करण (globalization) इस कलियुग में रामचरित मानस की कथा मनुष्य क विकारों को विनाश कर "वसुधैव कुटुबकम" की भावना को उत्पन्नकर, बहुजन हिताय की भावन को उत्पन्न करनवाली बना दिया है।[2] शांत रस में लिखा गया यह काव्य त्याग तप सदाचार, परोपकार जसे सोपानों पर चढ़कर मनुष्य माया रूपी संसार से मुक्ति प्राप्त कर सकता ह। कवि के अनुसार मनुष्य लोभ, मोह में फ़ंसकर अपने जीवन को ही बेकार गुजारदेता ह। राम काव्य हिंदू समाज के लिए एक ऐसी संजीविनी हजो उसे पढ्कर समस्त संसार के रोगों से मुक्ति पाजात ह। तुलसीदास ने राम कथा को स्वांत: सुखाय और परांत: सुखाय दोनों के लिए लिखा ह। उन्हों ने कहा हकि "कलि मल हरण करना तुलसी कथा रघुनाथ की" खा ह। कवि श्रीराम को ईश्वर का प्रतिरूप मानते हुए कहा हकि श्रीराम मनुष्यों का उध्दार करने के लिए ही अयोध्या के राजाकुमार के रूप में जन्म लेकर आये हैं।

कवट की भक्ति द्वारा भगवान श्राम का महत्व:-

२१ वीं सदी में भूमंडलीकरण के कारण हम बाजारवाद की ओर मुड रहे हैं। अर्थ की प्रधानता बडगई हवज्ञानिक क्षितिज छोटा होगया ह। प्रभुत्व की इच्छा ब्कर्ने वाले आपस में टकरारहे हैं हम दिनों दिन स्वर्ग की समृध्दि के सपने संजोये मस्तिष्क से आंदोलित होते जरहे हैं। अत: ह्रदय तत्व कमजोर होते जारहे हैं।फ़ल स्वरूप जीवों में श्रेष्ठ मानव मौश्यता कीपरिभाशा से वंचित होकर मारामरी बडरहा ह। फ़लस्वरूप शांती गायब होती जरही ह। ऐसे संदर्भ में राम काव्य बहुत मत्व पूर्ण हैं।

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved

राम-लक्षमण सीता के वनवासके बाद मानवरूपी राम के साअमने एक विकट समस्या आखडी ह॥ उन्हें नदी पार करना ह॰वे दूर बठे केवेट को नाव लाने कहते हैं लेकिन केवट उनकी बातें न सुनकर बठ जात ह॥ कहता ह॰- मैं तुम्हारे बातध्ओं मे फ़ंसने वाला नहीं म॰तुम्हें जानता हूं तुम्हारे शक्ति का ज्ञान ह॰मुझे, मैं तुम्हें मेरी नॉव पर तब तक चढने नहीं दूँगा जबतककि तुम अपने चरनों को धोन की अनुमती नहींदेते। तुलसी लिखते हैं-

मांगी नाव ना केवट आना।
कहइ मरम म॰जाना॥
चरनकमल रजक हुँ सबहु कहइ।
मानष करनि मुरि कछु अहई॥[3]

तुलसीदस भगवान श्रीराम को भगवान बनाने का पूरा प्रयास करे हैं। वे अवतार वाद आराधक कवि हैं। भगवान श्रीराम की मूर्ति को सामने प्रस्तुत कर लोक कल्याण करने का प्रयत्न करते हैं। वे कहते हैं -

“राम रटु राम रटु, राम राम जपु ज॰हा
राम नाम नव नह मह को मन हठ होहि पप॰हा”[4]

भक्ति धार के कवियों में तुलसीदास अग्रणी कवि हैं सगुण भक्ति धारा में उनका नाम मशूर ह॥ अपने साहित्य द्वारा लोक (जगत) कल्याण का भरपूर प्रयत्न किए हैं।

सदर्भ ग्रथ:-

1. काव्य तारा, सं. डॉ. बद्रीनाथ तिवारी, राजकमल प्रकाशन, पटना- पृष्ठ - 30
2. रमचरित मानस, अयोध्याकांड भाग संत तुलसीदास पृष्ठ - 13
3. अपनी माटी, केवट की भक्ति भावना, डॉ.पुष्पा सिंह पृष्ठ - 27
4. विनय पत्रिका सटीक डॉ. सुरेश अग्रवाल , अशोक प्रकाशन, पटना- पृष्ठ - 19